व्यक्ति एवं विचार
सावित्रीबाई
एक प्रवर्तक की कहानी
एक
दोन
तीन
अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय प्रकाशन
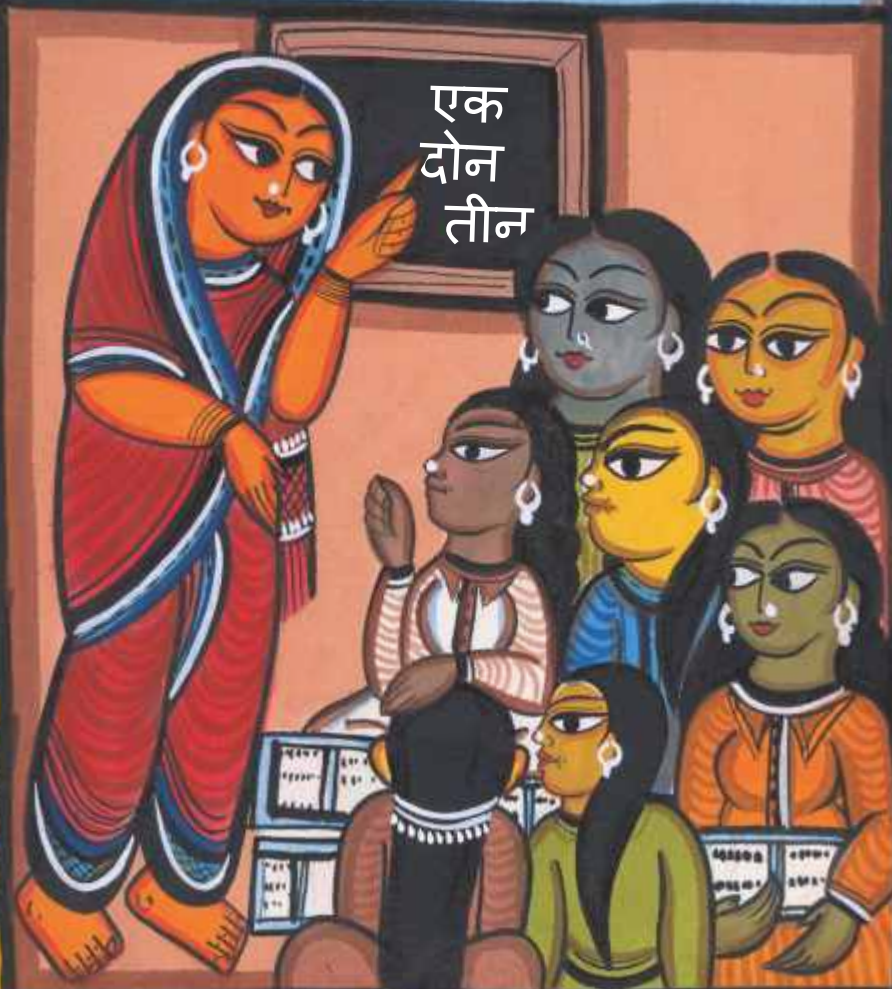
विचार एवं लेखनः
लीया वर्गीस और मेधा सुंदर, अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय

हिन्दी अनुवादः
रंजना, अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय

चित्रांकनः
सुमन चित्रकार, पश्चिम बंगाल के पटुआ चित्रकार

डिज़ाइनः
जयश्री नायर-मिश्रा, अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय

अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित 2014

प्रिंटेडः
एस सी पी एल डिज़ाइन, 2/1, जे सी इंडस्ट्रियल ऐरिया
कनकपुरा रोड, बैंगलूरु - 560 062, इंडिया

हम आभारी हैं....

१. मंगेश दहीवाला और मणुसकी, पुणे के जिन्होंने सावित्रीबाई पर जानकारी प्राप्त करने में हमारी सहायता की।

२. सिन्थिआ स्टीफेन, राज्य प्रोग्राम निर्देशक, महिला समाख्या, कर्नाटक - जिन्होंने सावित्रीबाई पर शोध करने में तथा फूले दम्पति के काम का ऐतिहासिक सन्दर्भ दर्शाने में बहुमूल्य योगदान दिया।

३. अनन्या भट्टाचार्य ने हमें पटवा चित्रकारों से मिलवाने में मदद की।

४. बंकू चित्रकार ने इस चित्रकथा के रेखाचित्रों की कल्पना कर सुमन चित्रकार की सहायता की।

५. किशोर चौरे ने फूले परिवार के वंशजों से हमारा मेल कराया।

६. पुणे में सावित्रीबाई के वंशज जिन्होंने अपनी कहानियाँ तथा संस्मरण हमारे साथ बाँटे।

७. सुष्मा देशपांडे ने इस चित्रलेख पर पुनर्विचार कर अपने बहूमूल्य सुझाव दिए।

८. निलांजन चौधरी ने इस प्रोजेक्ट का मार्गदर्शन कर सही जानकारी प्राप्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

भूमिका

इतिहास में शामिल उन तमाम लोगों के नाम लेते हुए, जिन्होंने समाज के बदलाव में अपना अतुलनीय योगदान दिया है। ना जाने क्यों सावित्रीबाई फूले का नाम अक्सर ही वह स्थान नहीं पा पाता है। वहीं अपने क्रांतिकारी कदमों, सामाजिक सुधारों और शिक्षा के क्षेत्र में सुधार में महात्मा ज्योतिराव फूले का नाम अत्यंत आदर और सम्मान के साथ लिया जाता है, जबकि सावित्रीबाई, ज्योतिराव के हर सामाजिक सुधार के कार्य में और हर बदलावी बयार में बराबरी की सहभागी थीं। यह अत्यंत महत्वपूर्ण और आवश्यक है कि सावित्रीबाई का मूल्यांकन करते हुए हम यह जानें और मानें कि वे महज़ ज्योतिराव की पत्नी ही नहीं थीं बल्कि अपने विचारों और कार्यों में समय से आगे चलने वाली स्त्री भी थीं। इतना ही नहीं समाज के संस्थागत तरीकों और रूढ़िगत विचारों से लड़ते हुए उन्होंने जिस साहस और संवेदना का परिचय दिया वह इतिहास में उन्हें एक अलग मुकाम दिलाता है।

इस ग्राफिक उपन्यास के जरिये सावित्रीबाई के जीवन, उनके विचारों और उनके ज्योतिराव के साथ किए गए प्रभावकारी कार्यो को देखने और समझने का प्रयास किया गया है। नौ बरस की उम्र में विवाह के उपरांत सावित्रीबाई उन कुछ महिलाओं में से एक रही हैं जो शिक्षक बनीं। इस दंपति ने लड़कियों के लिए एक विद्यालय की शुरुआत की (जिसे लड़कियों के लिए शुरू किया गया पहला विद्यालय माना जाता है) तमाम तरह के विरोध के बावजूद यह वह स्थान था जहां समानता और सशक्तिकरण के साथ ही किसी भी तरह के भेदभाव की कोई गुंजाइश नहीं थी। समाज की तत्कालीन व्यवस्था के खिलाफ नए रास्ते बनाते हुए उन्होने निःस्वार्थ त्याग और सेवा के साथ गरीबों और वंचितों के लिए समानता, साहस न्याय और शिक्षा में विश्वास और समान अवसरों को प्रगति का एक मात्र विकल्प बताया।

हमने तय किया कि सावित्रीबाई के जीवन और आदर्शों को पश्चिम बंगाल की परंपरागत कहानी कहने की लोककला पटुआ के जरिये बताया जाए। इसके चित्रों को मिदनापुर के सुमोन चित्रकार ने तैयार किया है। परंपरागत रूप से पटुआ शैली का उपयोग दुर्गा की शक्ति संबंधी कहानियाँ सुनाने के लिए किया जाता है। यहाँ हमने सावित्रीबाई की आंतरिक शक्ति को दुर्गा की शक्ति का स्वरूप मान कर पटुआ शैली का उपयोग किया है।

मेधा सुंदर, अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय

19 वीं शताब्दी में महाराष्ट्र

पेशवा बाजीराव द्वितीय का शासन काल इतिहास में फिज़ूलखर्च और अयोग्य शासक के रूप में दर्ज है। बतौर पेशवा वह एक खराब शासक था। वह अपने सामंतों को नीचा दिखा कर खुश होता था। बेवजह के कारणों को बता कर उनकी सम्पत्तियां हड़प लेता था और उनकी महिलाओं पर आधिपत्य जमा लेता था।

उस ज़माने में सामाजिक रीति-रिवाज सख्त और संकीर्ण थे। जाति व्यवस्था अपने चरम पर थी। छोटी जातियों के लोग जैसे - महार, चमार, भंगी, धेड़क - उच्च जातियों के लोगों के साथ सड़क पर भी बराबरी से नहीं चल सकते थे।

महाराष्ट्र में ब्राह्मण समुदाय कुल जनसंख्या का पाँच फीसदी था। इस समुदाय ने पश्चिमी शिक्षा प्रणाली को अपनाकर उन सरकारी सेवाओं में स्थान प्राप्त कर लिया था जो भारतियों के लिए खुले थे और शासकीय निर्णयों को अपने हित में प्रभावित करने लगे थे।

पेशवा बाजीराव
बैठ जाओ, ब्राह्मण पर
हमारी छाया तक नहीं
पड़नी चाहिए।
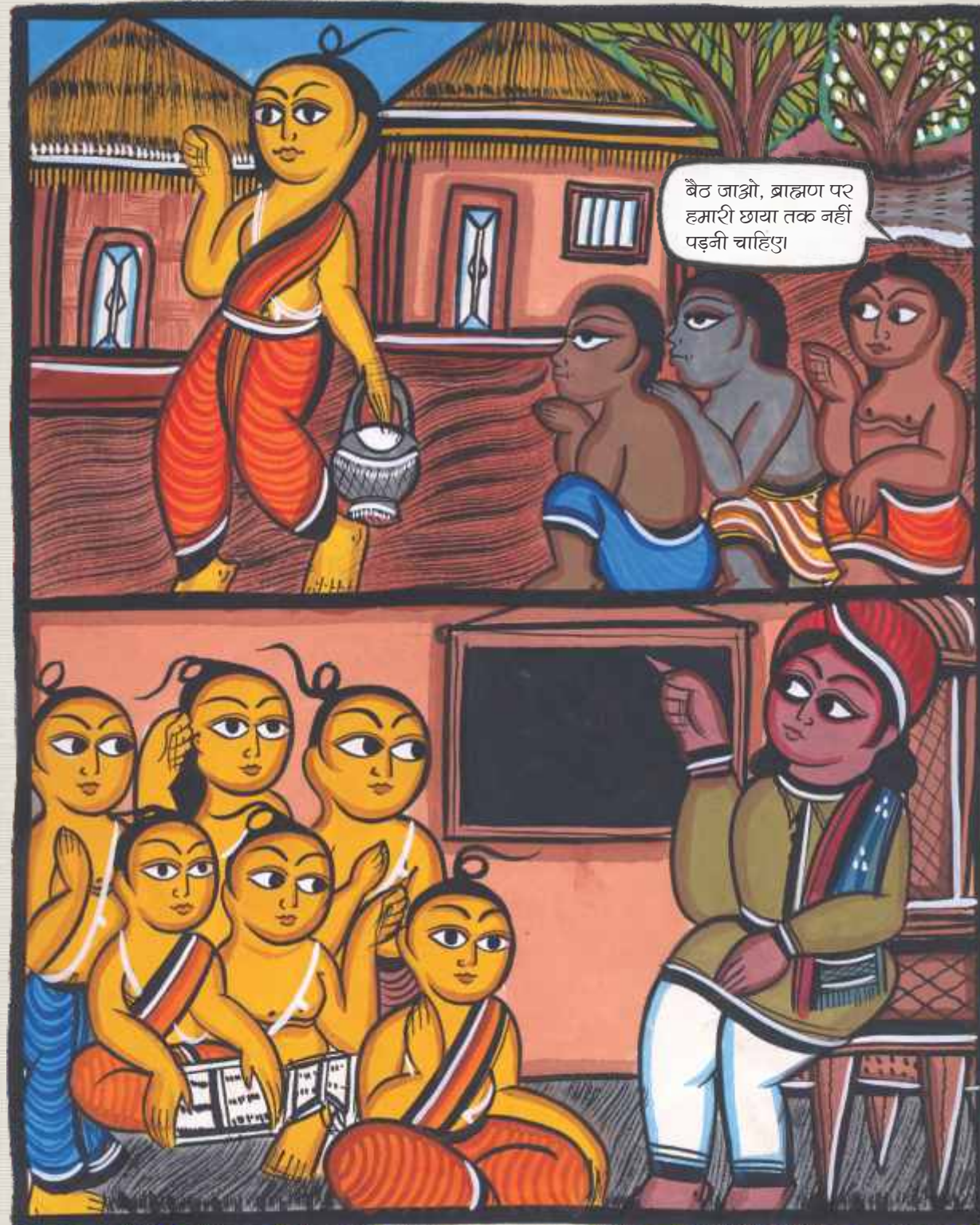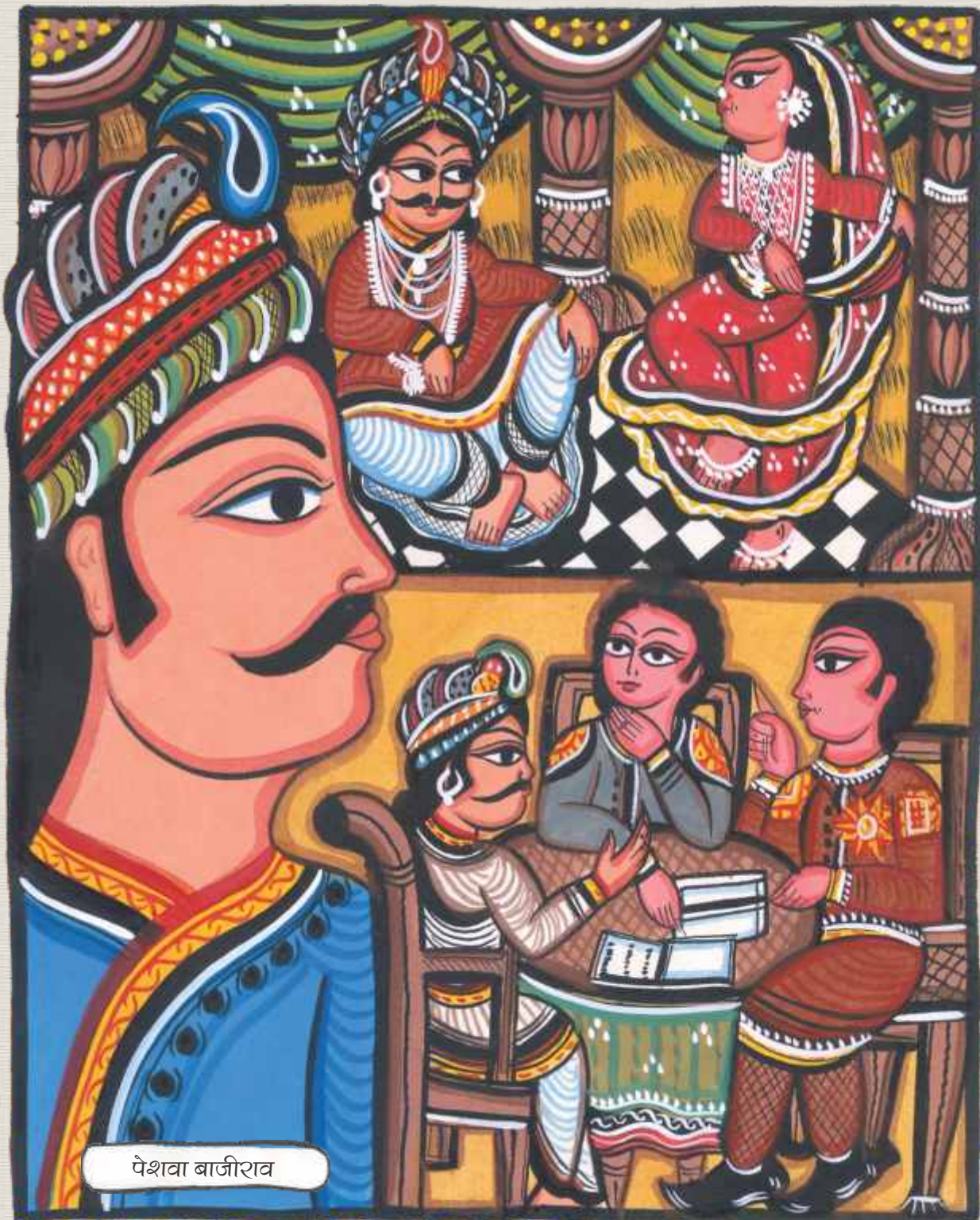
हालांकि अंग्रेज़ जातिवाद का विरोध करते थे लेकिन वे कोई ज़बरदस्त बदलाव का प्रयास नहीं करना चाहते थे जिससे उनकी सत्ता पर कोई खतरा बने, खासकर 1857 की क्रांति के बाद।

लेकिन 19वीं सदी के मध्य में क्षितिज पर बदलाव के बादल दिखने लगे थे। पश्चिमी शिक्षा विस्तार पा रही थी, जिससे सभी मनुष्यों में समानता, मानवीय स्वतन्त्रता, धर्म निरपेक्षता, जैसे विचारों से भारतीय विद्यार्थी परिचित हो रहे थे।

शहरी क्षेत्रों में उद्योगों, संचार के साधन और रेल जैसी सुविधाओं का विकास हो रहा था।

शहरी क्षेत्रों के लोगों ने नई जीवन शैली को अपनाना शुरू कर दिया था और वह ग्रामीणों की तुलना में कम परंपरावादी होने लगे थे।
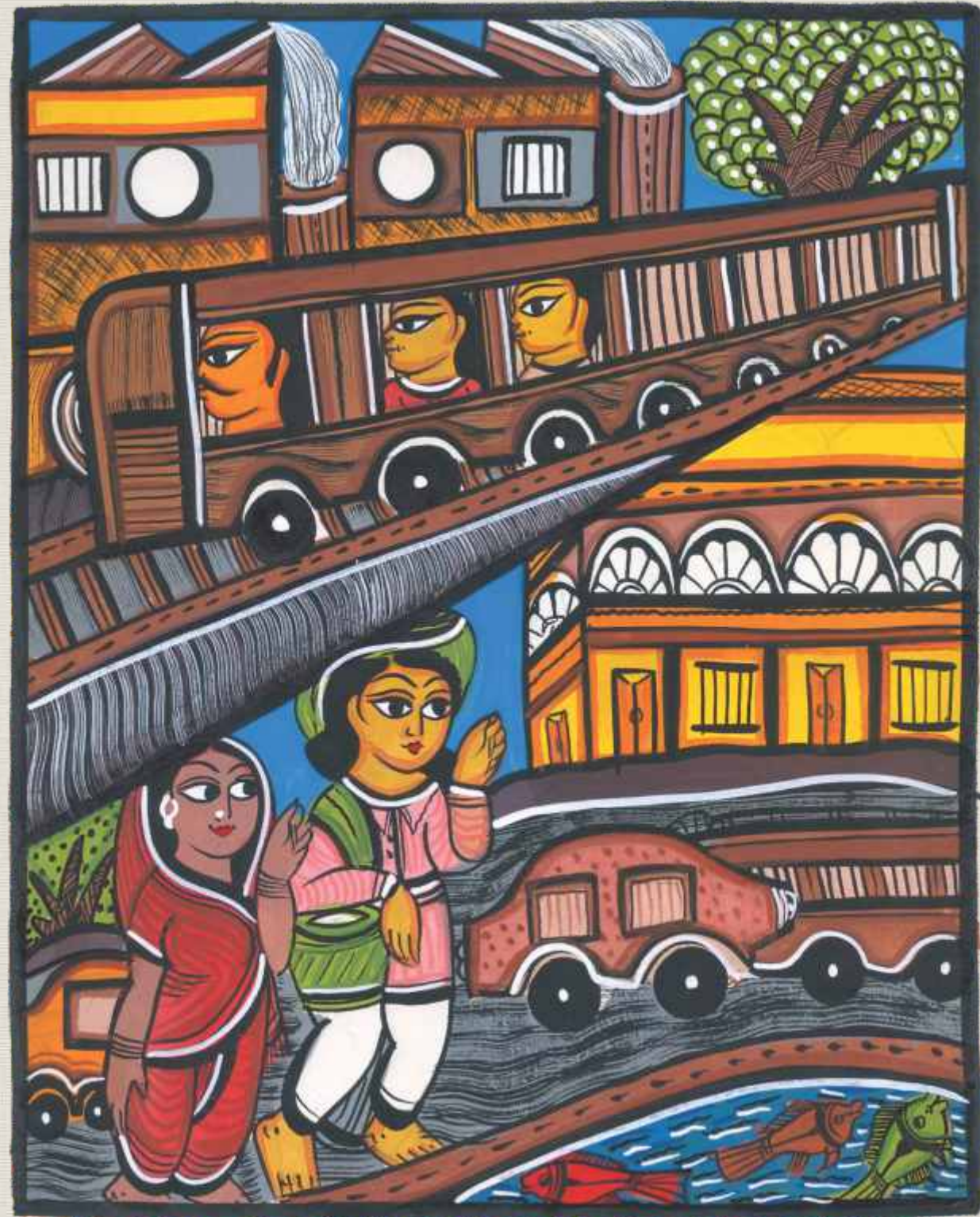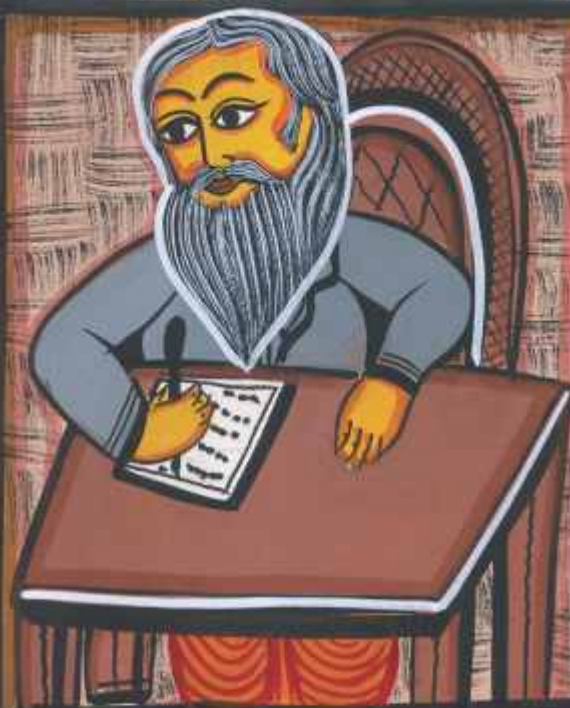
1882 में गवर्नर जनरल रिपन ने सिक्रेटरी ऑफ स्टेट ग्लेड स्टोन को लिखा "हर वह व्यक्ति जो समय के संकेतों को भाँप सकता है, उदारवादी होने के बाद भी इस बात पर संदेह नहीं कर सकता कि हम बदलाव के युग में प्रवेश कर रहे हैं।" शिक्षा का प्रसार, प्रेस की आज़ादी का मौजूदा बढ़ता प्रभाव, विचरवान प्रशासन के लिए कानून का उपयोग, रेलवे की प्रगति, टेलीग्राफ, यूरोप के साथ आसान संचार और यूरोपीय विचारों के आगमन से लोगों के विचारों में पर्याप्त बदलाव आया है। नए विचार अपनी जड़े जमा रहे हैं, नई आकांक्षायें विस्तार पा रही हैं, लोकविचार मजबूत हो कर बढ़ रहे हैं और आंदोलनों की शुरुआत हो चुकी है जो हर बरस तेज़ी से ताकत के साथ बढ़ रहे हैं।

महाराष्ट्र के लोग भी देश में चल रहे सामाजिक परिवर्तन के दौर से प्रभावित हुए, जिसका नेतृत्व समाज सुधारक राजा राम मोहन राय, ईश्वर चंद विद्यासागर, दयानन्द सरस्वती आदि द्वारा किया गया था।

सावित्रीबाई फूले इसी दौर में पैदा हुईं, पली और बड़ी हुईं।

सावित्रीबाई का जन्म 3 जनवरी, 1831 को सतारा जिले के नएगाँव में खांडुजी नवासा के घर हुआ।
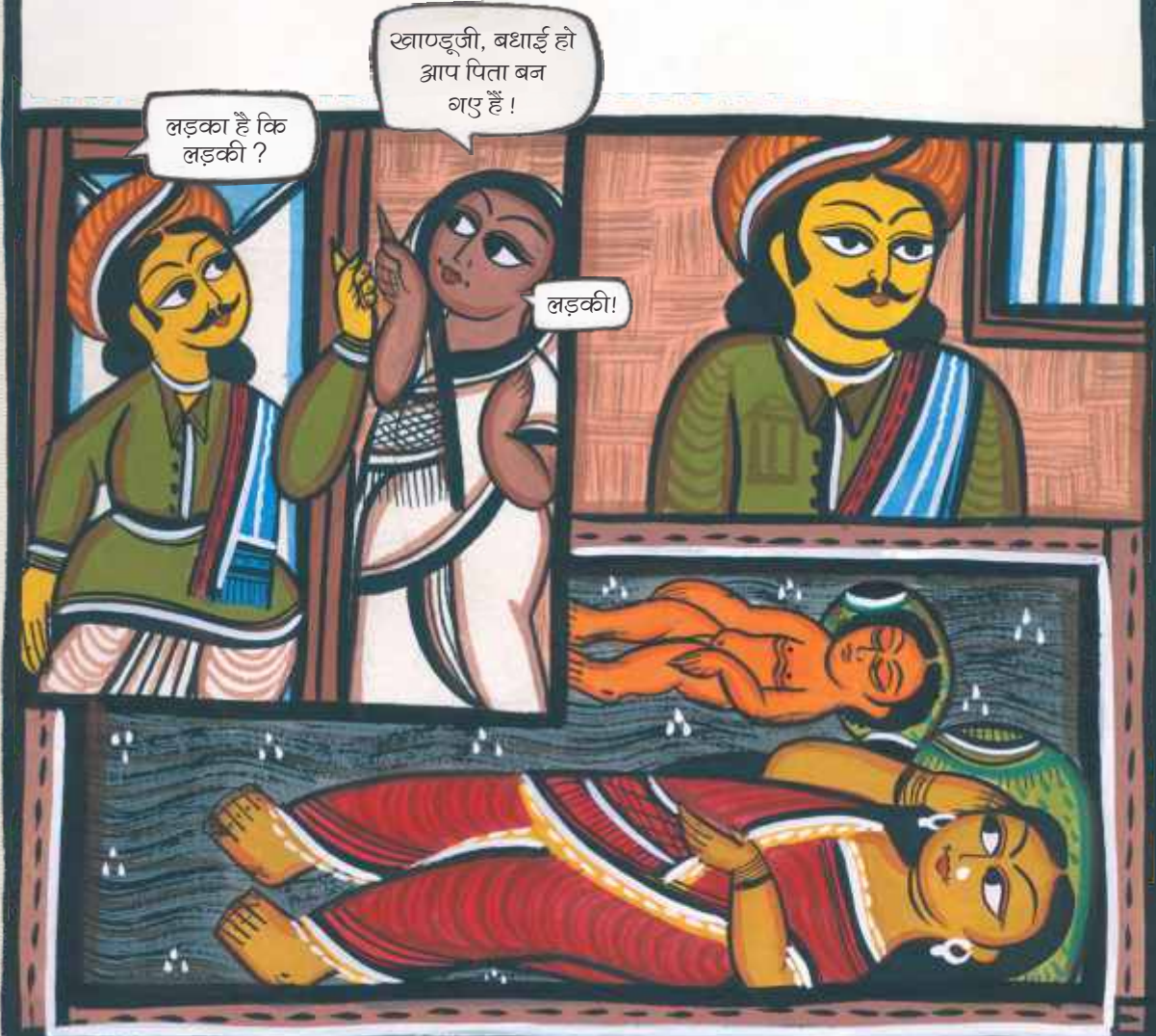
लड़का है कि लड़की ?

खाण्डूजी, बधाई हो आप पिता बन गए हैं !

लड़की!

बच्चे का नाम सावित्री रखा गया

सावित्री बचपन से ही बहुत जिज्ञासु थी, वह हर नई बात सीखना चाहती थी।

तुम क्या कर रही हो ?

खाना पका रही हूँ, तुम बाहर जा कर खेलो ।

तुम चूल्हा क्यों फूँक रही हो?

आग जलाने के लिए।

मुझे भी ऐसा करना है!

अच्छा, कर लो, फिर रसोई से चली जाना ।

चूल्हा फूंकते ही राख सावित्री के मुंह पर आ गयी,
और वह रसोई से बहार भाग गई।
यह देख कर माँ मुस्कुराने लगी।
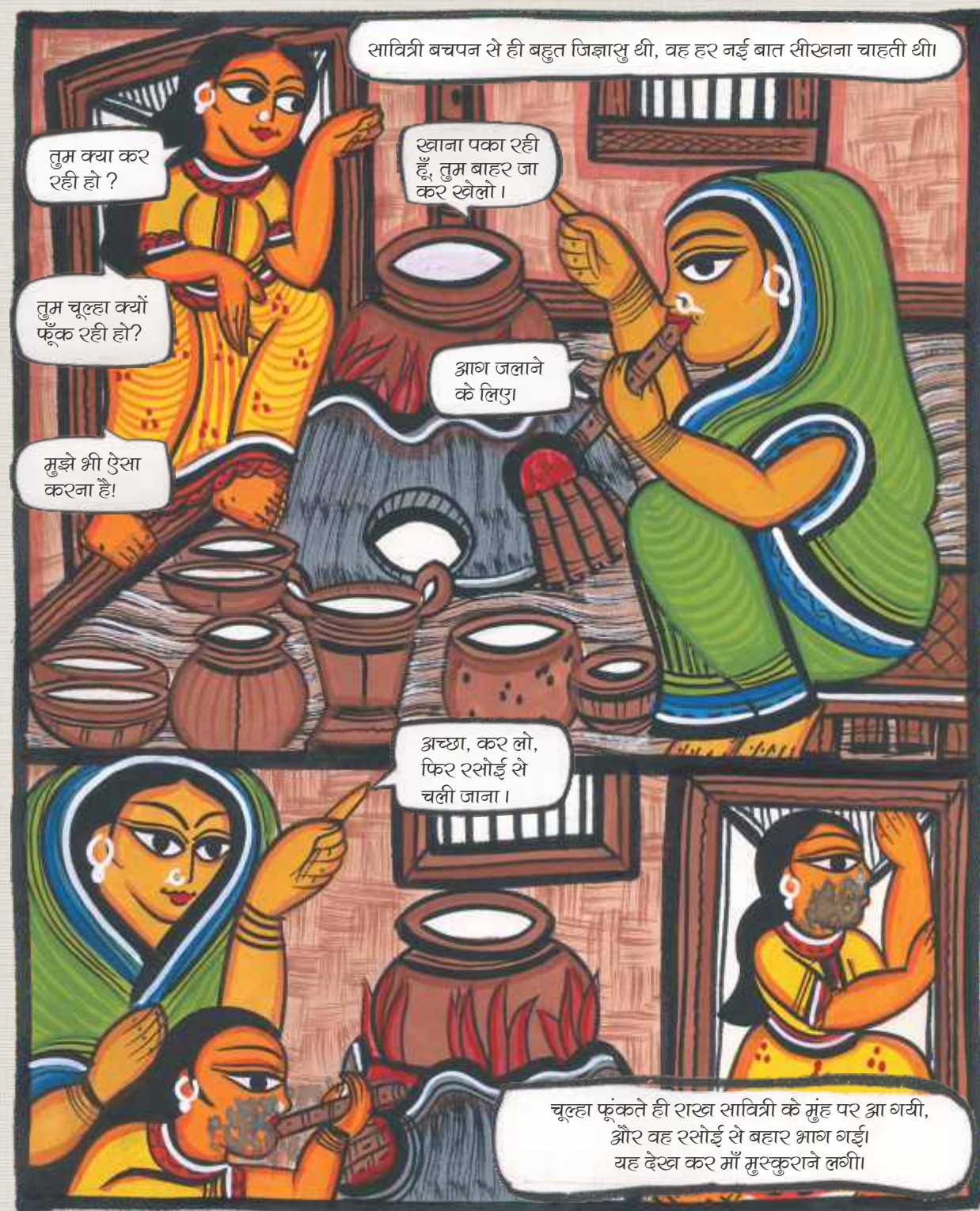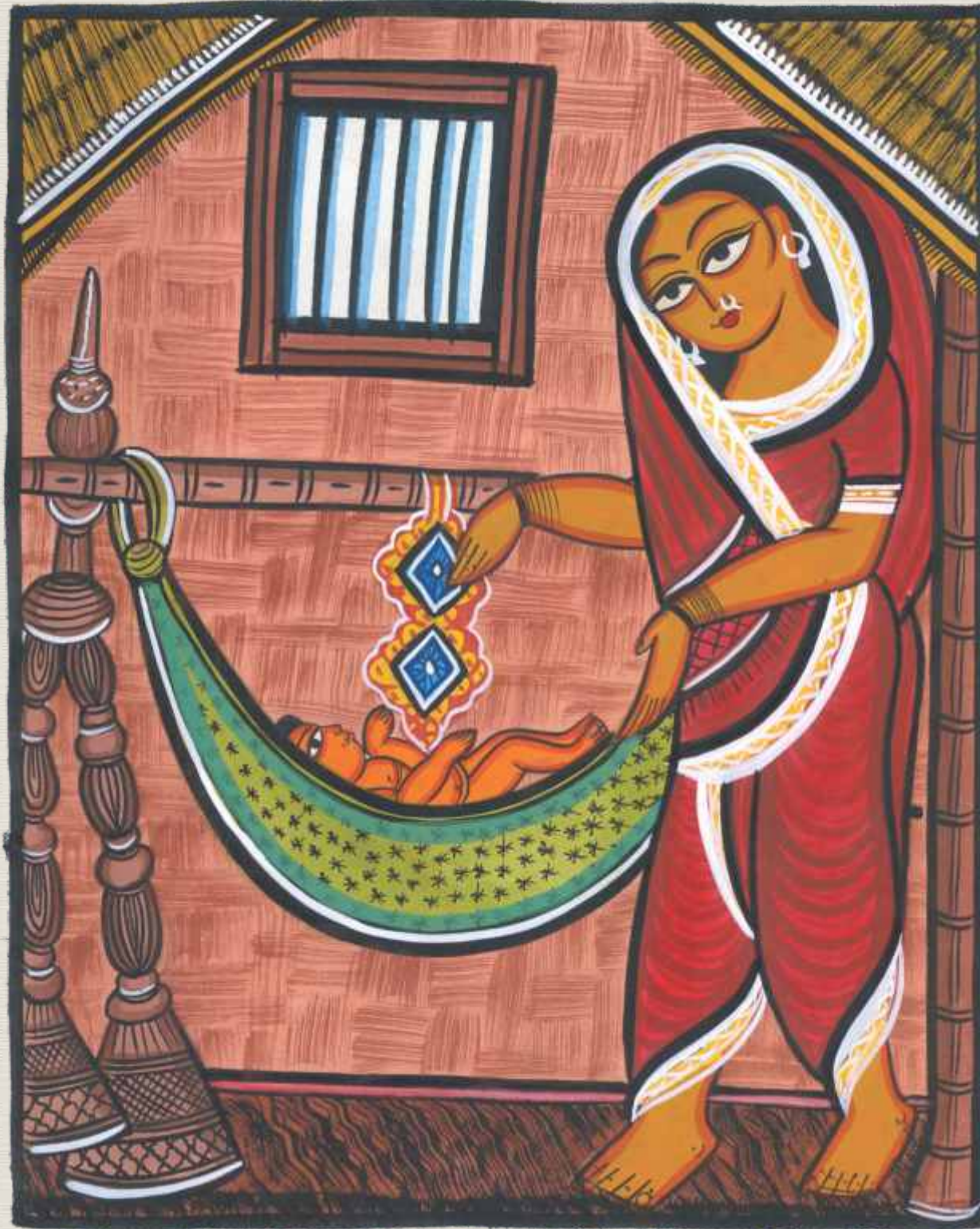
सावित्री बहुत
हिम्मती भी थी।

अरे! गोविंद
क्यों रो रहा है?

पेड़ पर साँप है ! वह
पेड़ से कैसे उतरे!

सावित्री बिना डरे पेड़ पर चढ़ गई और साँप को पकड़
कर उसे दूसरे पेड़ पर छोड़ दिया। गोविंद चुप हो गया
और नीचे उतर आया।

1840, अब सावित्री 9 वर्ष की हो गयी थी।

मैंने सावित्री के लिए वर
ढूंढ लिया है। वह गोविंद
राव का बेटा है और वह
लोग भी 'माली' ही हैं।

उसका क्या
नाम है?
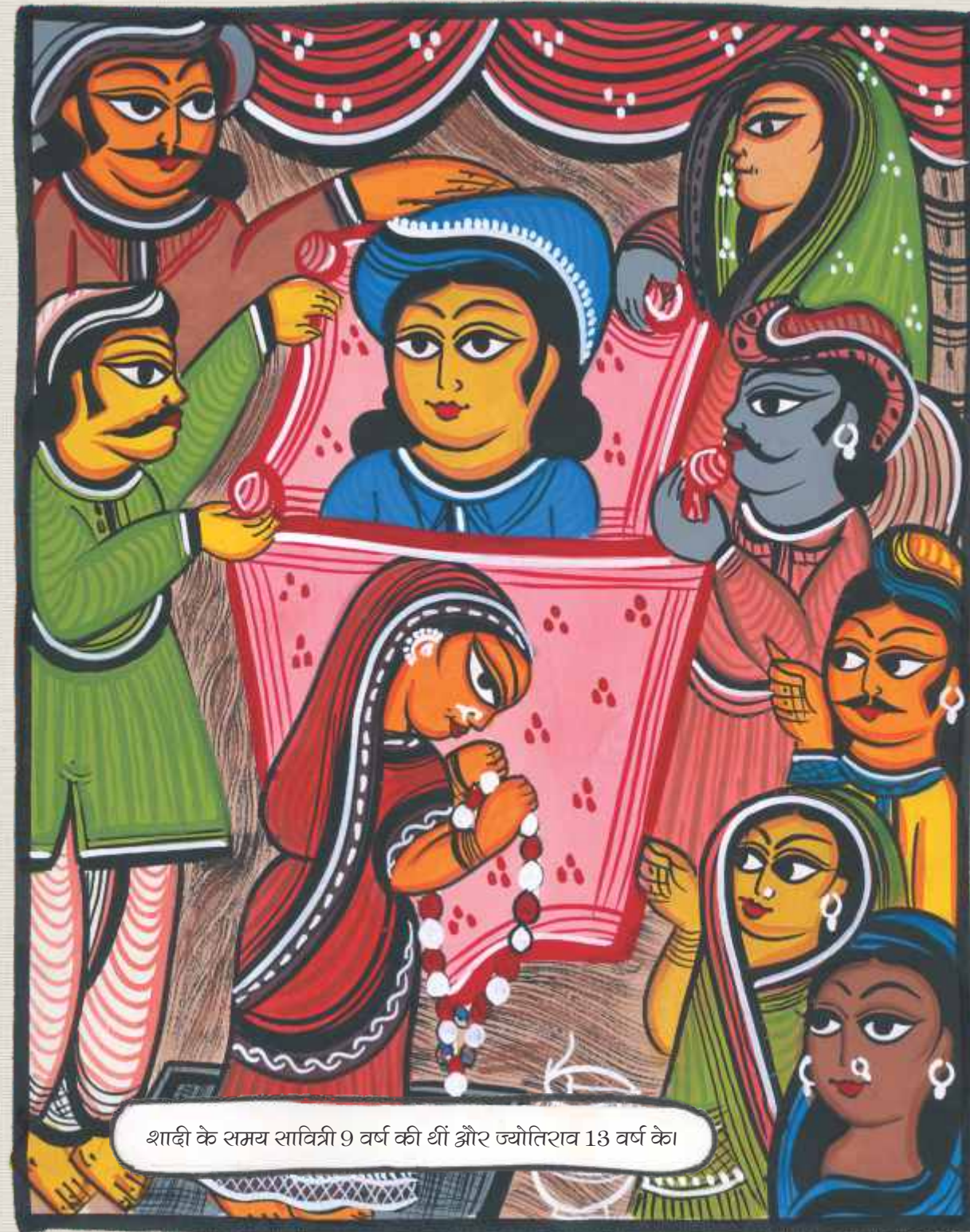
ज्योतिराव

शादी के समय सावित्री 9 वर्ष की थीं और ज्योतिराव 13 वर्ष के।

शादी के बाद सावित्रीबाई पुणे आ गईं।
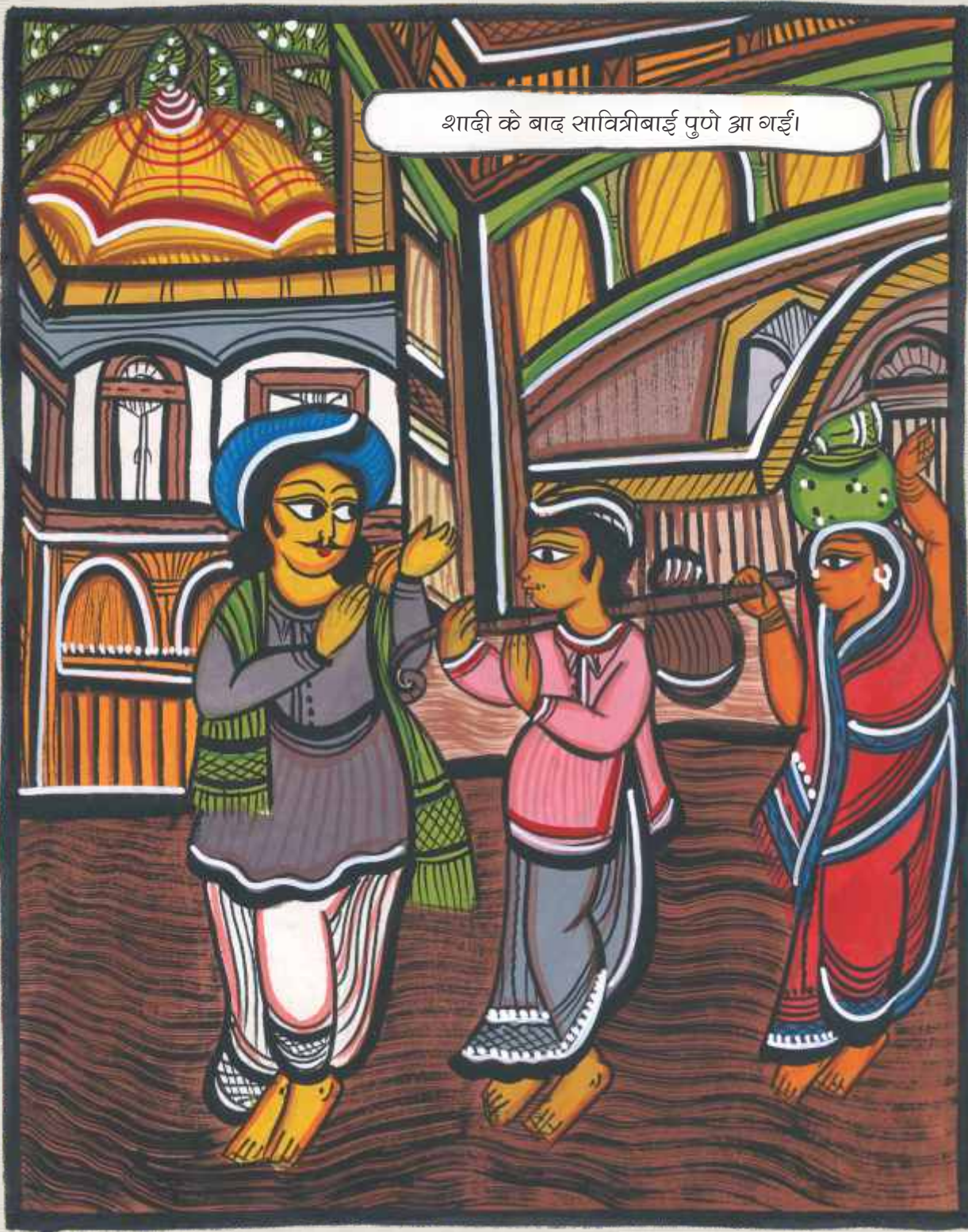
ज्योतिराव ने एक मिशनरी स्कूल में पढ़ाई की थी, उनकी शिक्षा में उनकी चचेरी बहन सगुनाबाई, जो बाल विधवा थीं, की महत्वपूर्ण भूमिका थी।

तुम्हें ज्योति को स्कूल भेजना चाहिए। मिस्टर जॉन ने कहा है कि वह ज्योति की शिक्षा में मदद करेंगे। (सगुनाबाई मिस्टर जॉन के साथ काम करती थी)।

ठीक है!
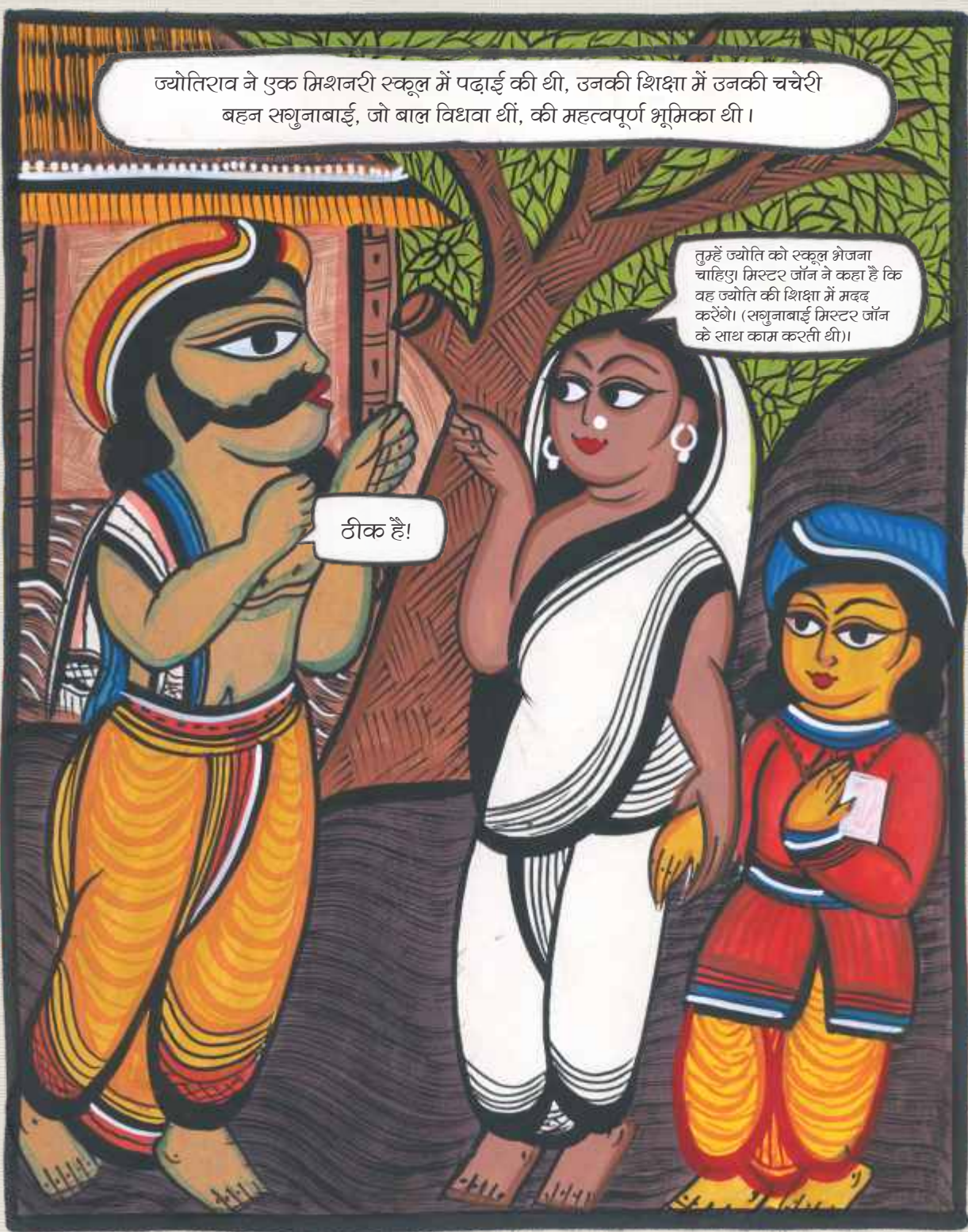
ज्योतिराव, थॉमस पाइने के विचारों से बहुत प्रभावित थे।

“मेरा विश्वास सबकी समानता में है.......
हमारा प्रयास सबको सुखी बनाने का होना चाहिए।
यह विश्व मेरा देश है और सभी मनुष्य मेरे भाई-बहन
हैं, और अच्छे काम करना ही मेरा धर्म है......”

वे महिलाओं की शिक्षा के लिए उपलब्ध कम अवसरों
को ले कर बहुत चिन्तित थे।

मैंने यह देखा है कि हमारे यहाँ लड़कियों के
लिए स्कूल नहीं हैं। यह ठीक नहीं है क्योंकि
जब तक बहुत सी महिलाएं शिक्षित नहीं होंगी
हम प्रगति नहीं कर सकते हैं। हमें
लड़कियों के लिए एक स्कूल खोलना चाहिए।

ज्योतिराव ने अपनी पत्नी को पढ़ाना शुरू कर दिया।

शिक्षक प्रशिक्षण
संस्थान

फिर सावित्रीबाई शिक्षक प्रशिक्षण के लिए अहमद नगर स्थित
श्रीमती फरार के संस्थान और पुणे के नारमन स्कूल गईं।

लड़कियों की पाठशाला

1848 में ज्योतिराव और सावित्रीबाई ने पुणे के भिंडेवाड़ा में लड़कियों के लिए एक स्कूल खोला। सावित्रीबाई उसकी प्रधानाध्यापिका बन गईं।
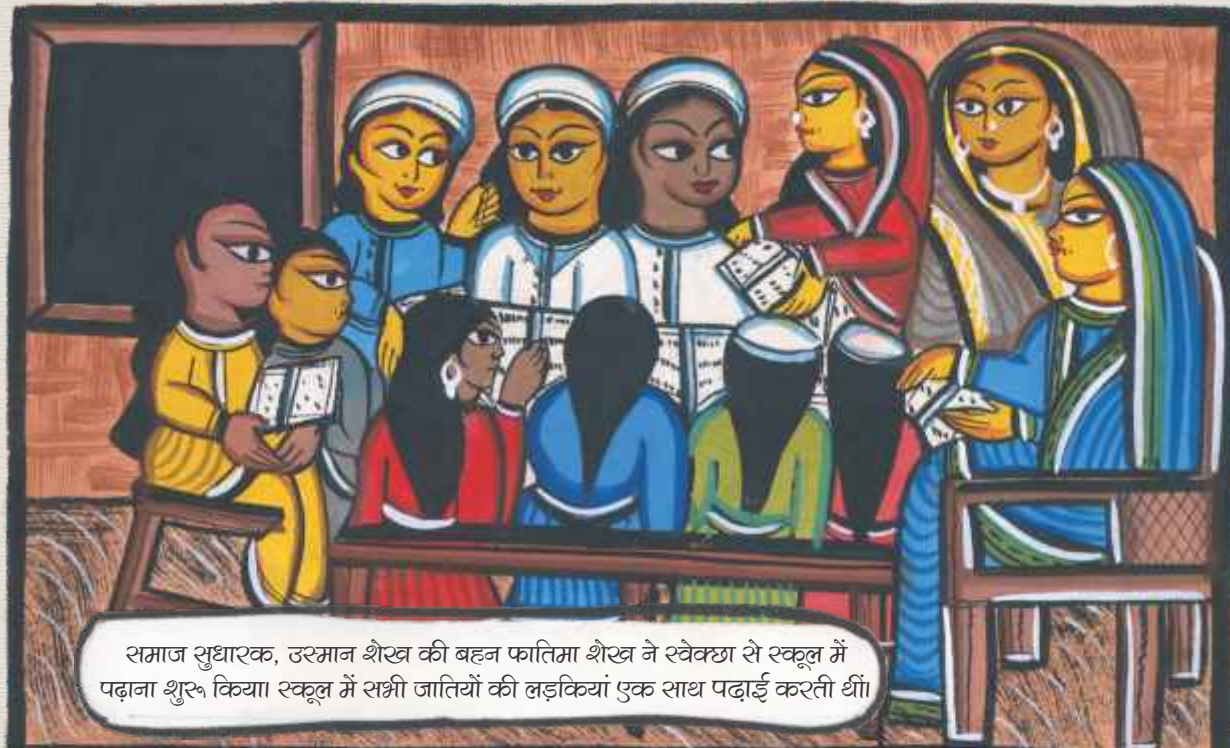
समाज सुधारक, उस्मान शेख की बहन फातिमा शेख ने स्वेच्छा से स्कूल में पढ़ाना शुरू किया। स्कूल में सभी जातियों की लड़कियां एक साथ पढ़ाई करती थीं।
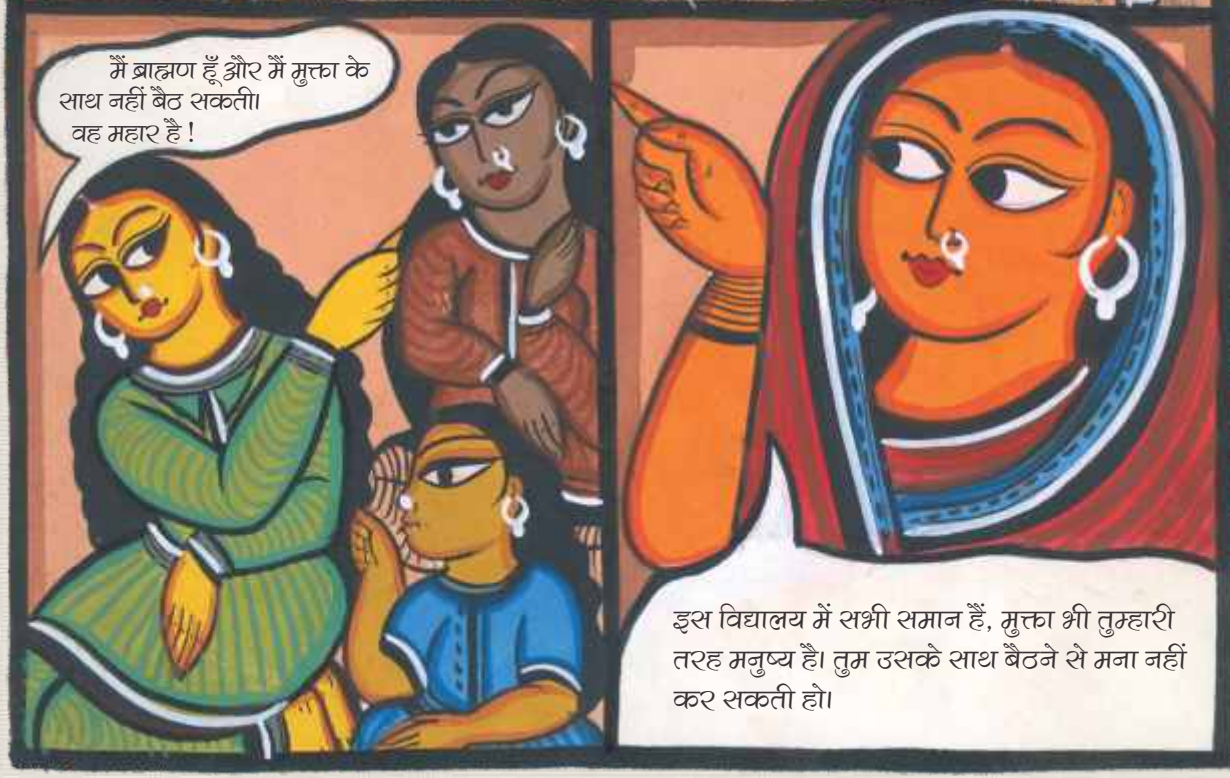
मैं ब्राह्मण हूँ और मैं मुक्ता के साथ नहीं बैठ सकती। वह महार है !

इस विद्यालय में सभी समान हैं, मुक्ता भी तुम्हारी तरह मनुष्य है। तुम उसके साथ बैठने से मना नहीं कर सकती हो।

महिलाओं को शिक्षा देना उस समय स्वच्छंदता का प्रतीक माना जाता था इसलिए बहुत से लोगों ने फूले दंपति के इस प्रयास का विरोध किया। जब सावित्रीबाई स्कूल जातीं, लोग उन पर पत्थर और गोबर फेंकते।
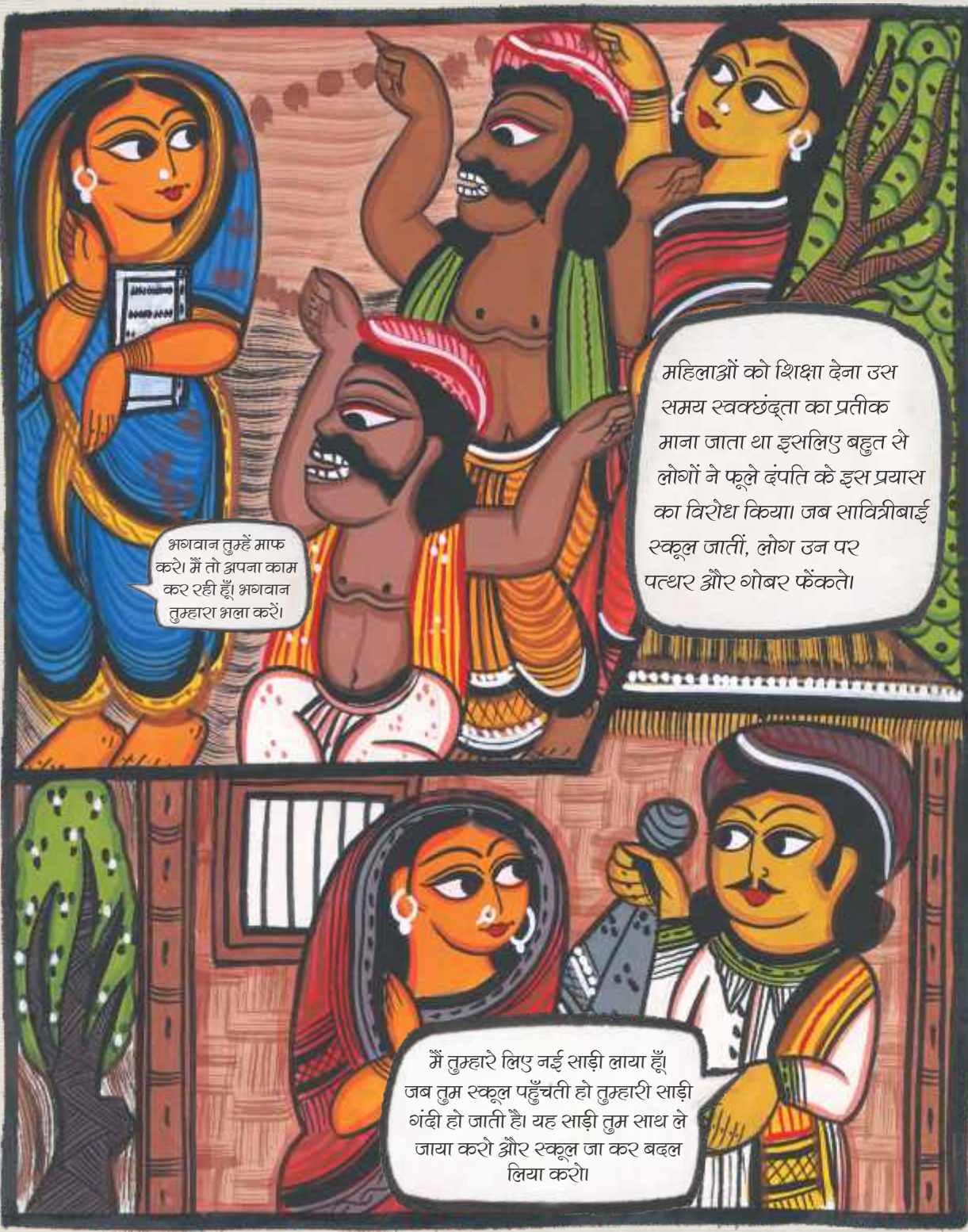
भगवान तुम्हें माफ करे। मैं तो अपना काम कर रही हूँ। भगवान तुम्हारा भला करें।

मैं तुम्हारे लिए नई साड़ी लाया हूँ। जब तुम स्कूल पहुँचती हो तुम्हारी साड़ी गंदी हो जाती है। यह साड़ी तुम साथ ले जाया करो और स्कूल जा कर बदल लिया करो।

एक दिन जब सावित्रीबाई स्कूल जा रही थीं एक लंबे-चौड़े, हष्ट-पुष्ट आदमी ने उनका रास्ता रोक लिया।

तुम्हें पता है जो तुम कर रही हो वह गलत है। महिलाओं को शिक्षा नहीं देनी चाहिए। उन्हे घर संभालना चाहिए।

मेरा रास्ता छोड़ो, मुझे जाने दो।

औरत हो कर तुम ऐसी बात कैसे कह सकती हो।

नहीं मैं नहीं हटूँगा, मैं तुम्हें कहीं नहीं जाने दूंगा। जो काम तुम कर रही हो वह हमारी संस्कृति और धर्म के विरुद्ध है। अपने घर वापस जाओ !

मैं घर नहीं जाऊँगी!

सावित्रीबाई को स्वयं पर और अपने काम पर अटल विश्वास था। रोज़-रोज़ मिलने वाली धमकियाँ और सामाजिक विरोध भी उन्हे उनके संकल्प से नहीं डिगा पाए।

तिलक जैसे राष्ट्रवादी व्यक्ति ने भी उस समय महिलाओं की शिक्षा का विरोध किया था।

अपना विरोध बताने के लिए लोगों ने ज्योतिराव के पिता गोविन्दराव से भी बात की। उन्होने गोविंदराव पर दबाव बनाया की वह फूले दंपति को अपना काम बंद करने के लिए कहें नहीं तो उन्हें अपने घर से निकाल दें।

स्कूल कमेटी की रिपोर्ट

"स्कूल की आर्थिक स्थिति खराब होने के कारण शिक्षकों को कम वेतन पर रखना बाध्यता है जिसके कारण जैसे ही उन्हें अच्छे वेतन का कोई अवसर मिलता है वे यहाँ से काम छोड़ देते हैं...स्कूल की प्रधानाध्यापिका सावित्रीबाई अकेली स्वयंसेवी हैं जो बिना वेतन की चिंता किए महिलाओं की शिक्षा के उद्देश्य में संकल्प के साथ जुटी हुई हैं"।

'पुना संडे ऑबज़र्वर' 29 मई, 1852 में प्रकाशित रिपोर्ट

"ज्योतिराव के स्कूल में लड़कियों की संख्या सरकारी स्कूल में पढ़ रहे लड़कों की संख्या से दस गुना है। इसका कारण उस स्कूल में पढ़ाने की पद्धति लड़कों के स्कूल से कई गुना बेहतर है। यदि स्थिति ऐसी ही बनी रही तो ज्योतिराव के स्कूल की लड़कियां पढ़ाई में लड़कों से बेहतर साबित होंगी और अगली परीक्षाओं के परिणाम में लड़कों से आगे निकल जाएंगी। यदि शासकीय शिक्षा बोर्ड इस स्थिति में सुधार के लिए कोई प्रयास नहीं करता है तो इन लड़कियों की उपलब्धि को देख कर लड़कों को शर्मसार होना पड़ेगा ।

जाति व्यवस्था के विरोध में लिखे पुरस्कृत निबंध को मुक्ता ने सारे स्कूल को पढ़ कर सुनाया।
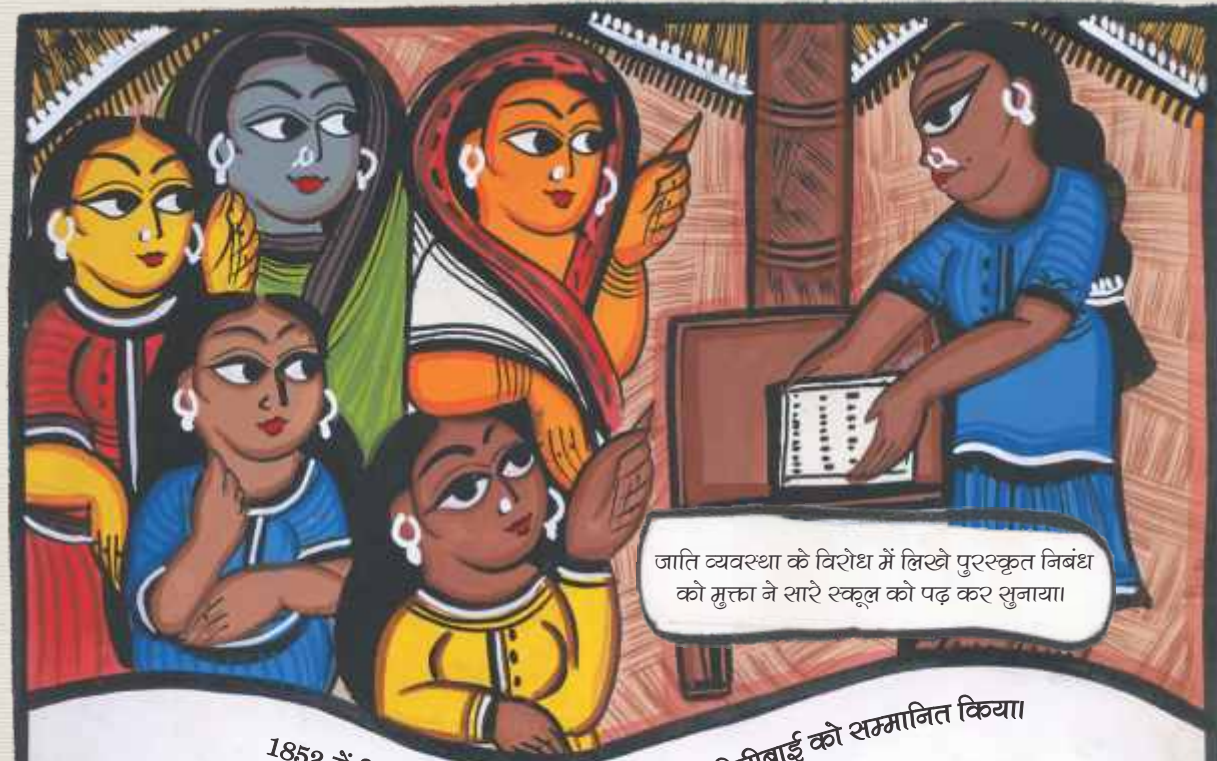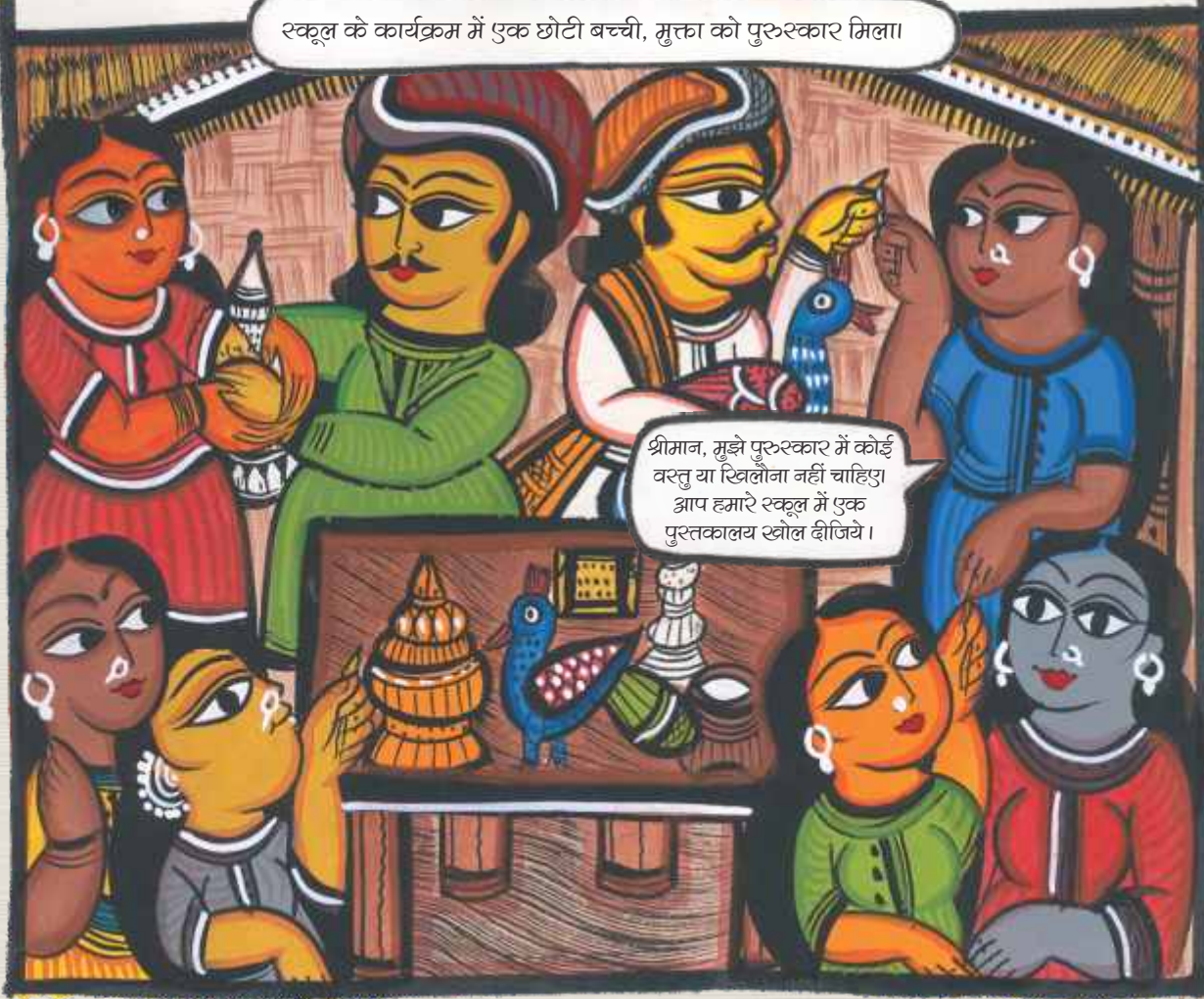
1852 में शिक्षा विभाग ने ज्योतिराव और सावित्रीबाई को सम्मानित किया। उसके बाद फूले दंपति ने पुणे में कई स्कूल खोले।
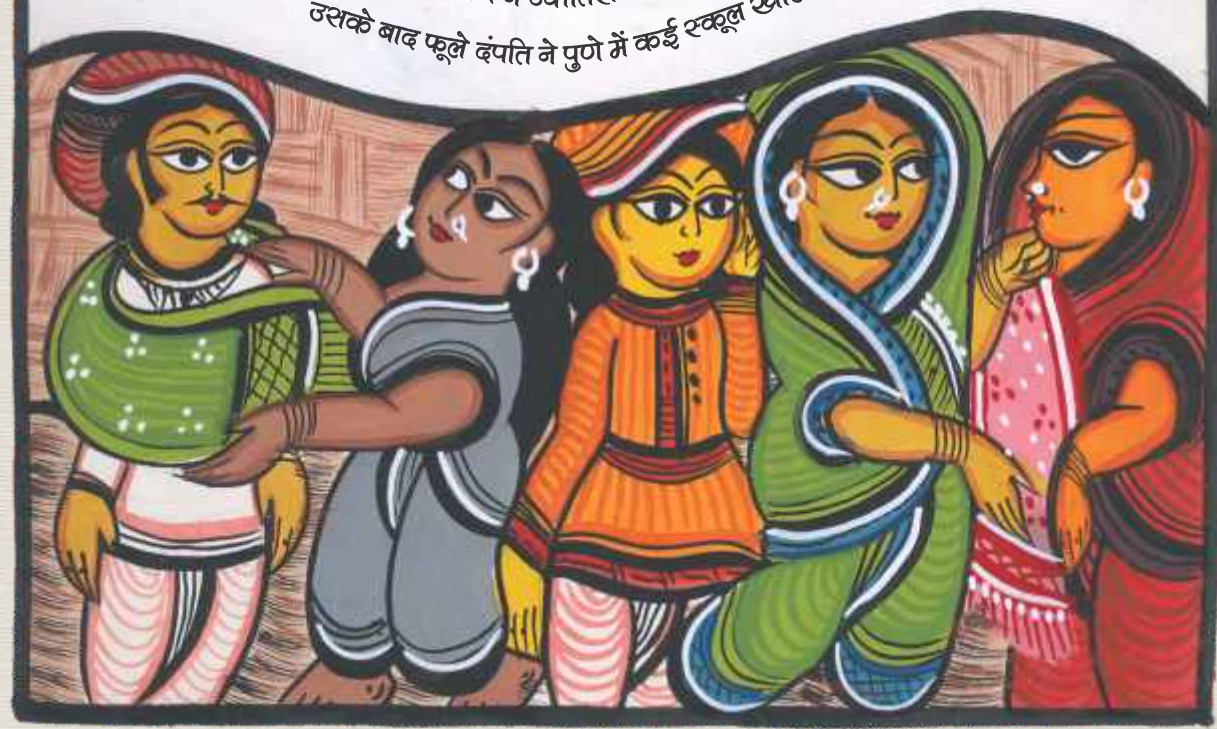
उन्होने बाहर से पढ़ने आने वाले बच्चों के लिए पुणे में एक छात्रावास भी खोला।

उस समय को याद करते हुए वहाँ रहने वाले एक छात्र लक्ष्मण कारड़ी जाया ने लिखा "मैंने सावित्रीबाई जैसी दयालु और ममतामयी स्त्री कभी नहीं देखी, वह हमें इतने प्यार करती थीं जितना कोई माँ भी नहीं कर सकती है।"

एक और छात्र महादू सहादू वाघले ने लिखा "सावित्रीबाई बहुत कृपालु और दयालु स्त्री थीं। वह गरीबों और जरूरतमंद लोगों की हमेशा मदद करती थीं। वह सबके भोजन का ध्यान रखती थीं कि सबको खाना मिल जाए।" वह गरीब स्त्रियों को अपनी साड़ियाँ दे देती थीं ताकि उनका शरीर ढका रहे।

उनकी इस उदारता की वजह से उनका खर्च भी बढ़ गया था।

हमें इतना खर्च नहीं करना चाहिए।

हम अपने साथ क्या ले कर जाएंगे।

उनका काम शिक्षा से कहीं आगे निकल गया था।

आज मैंने एक बहुत बुरी खबर सुनी। तुम्हें काशी बाई याद है, जो मेरे मित्र गोवन्दे के यहाँ काम करती थी?

हाँ, मुझे याद है। वह सुन्दर और युवा स्त्री।

किसी शास्त्री के साथ उसके संबंध थे, जब वह गर्भवती हो गयी तो उस शास्त्री ने बच्चे की जवाबदारी लेने से इंकार कर दिया। असहाय हो कर काशीबाई ने बच्चे की हत्या कर दी। पुलिस ने उसे गिरफ्तार कर लिया है।

देखो, हमारे समाज में विधवा स्त्रियों के साथ कैसा व्यवहार किया जाता है।

काशीबाई को कालापानी (अंडमान की एक जेल) की सज़ा हुई। इस घटना से व्यथित हो कर सावित्रीबाई ने गर्भवती विधवाओं के लिए अपने घर में ही एक आश्रय गृह खोल दिया।

शोषित विधवाओं के लिए आश्रय गृह

३६५ गंज पेठ, पूणे

सावित्रीबाई शोषित विधवाओं की देखभाल करतीं और प्रसव में उनकी मदद करती थीं।

एक दिन घर आते समय ज्योतिराव ने देखा कि एक विधवा आत्महत्या का प्रयास कर रही है।

रुको! तुम ऐसा क्यों कर रही हो?

तुम नहीं समझोगे!

तुम मुझे बताओ शायद मैं तुम्हारी कोई मदद कर सकूँ।

मैं गर्भ से हूँ यह जानते ही समाज मेरा जीना दूभर कर देगा। इससे अच्छा है कि मैं खुद को इस अजन्मे बच्चे के साथ ही खत्म कर लूँ।

मैं और मेरी पत्नी तुम्हारी तरह की पीड़ित स्त्रियों, के लिए एक आश्रय गृह चलाते हैं। तुम मेरे साथ आओ। तुम हमारे साथ रह सकती हो और अपने बच्चे को जन्म दे सकती हो। यहाँ कोई भी तुम्हें नुकसान नहीं पहुंचा सकेगा।

सावित्रीबाई और ज्योतिराव ने इसी विधवा स्त्री के बच्चे को गोद लिया और उसका नाम उन्होंने यशवंत रखा।

बहुत सारी अन्य कुप्रथाओं की तरह विधवाओं के सर से बाल उतार देने की एक बर्बरतापूर्ण कुप्रथा का चलन भी था। सावित्री बाई ने इस कुप्रथा के खिलाफ भी मोर्चा खोला।

अरे तुम सब नाइयों को आज क्या हो गया है? कोई भी इन विधवाओं के बाल क्यों नहीं उतार रहा है?

हम आज हड़ताल पर हैं। हम सब इस बर्बर रीति के खिलाफ हैं और अब हमे इसका हिस्सा नहीं बनना है।

हमें बच्चों को बीच में पढ़ाई छोड़ने से रोकने के लिए कुछ करना चाहिए। मुझे लगता है की पाठों को अधिक रुचिकर बनाया जाए ताकि बच्चों का मन लगा रहे।

हम बच्चों को स्कूल लाने के लिए कुछ और आकर्षक प्रस्ताव रख सकते हैं जैसे - छात्रवृत्ती।

मुझे लगता है की माता-पिता अशिक्षित होने के कारण शिक्षा के महत्व को नहीं समझ पा रहे हैं। हमें वयस्कों के लिए भी एक शिक्षा केंद्र खोलने के बारे में सोचना चाहिए।

व्यस्क साक्षरता केंद्र

फूले दंपत्ति ने अपने घर मे ही वयस्क साक्षरता केंद्र शुरू किया।
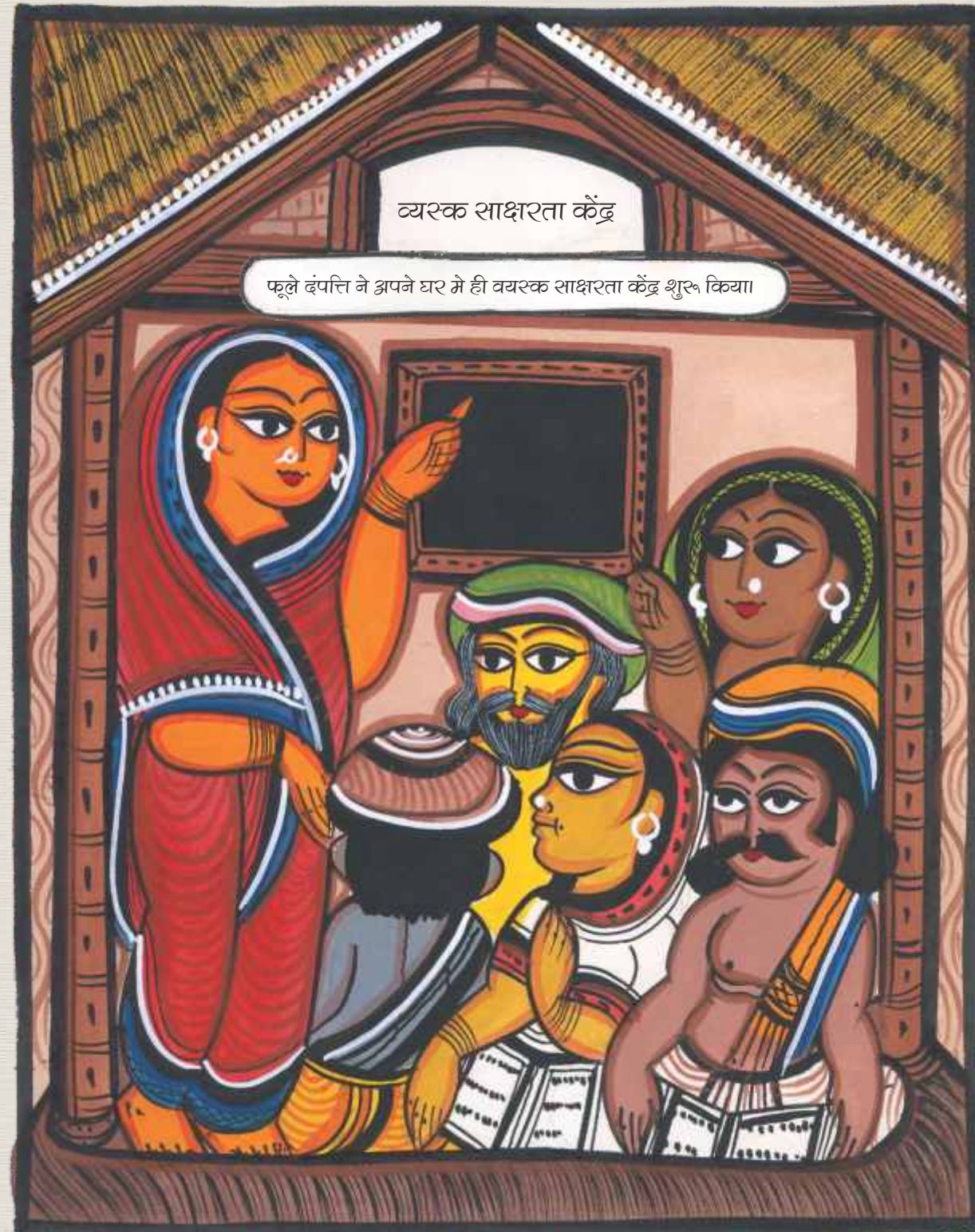
1868 में सावित्री बाई नयागाँव में बीमारी के बाद, आराम करने गई थीं।

क्या तुम उस ब्राह्मण गणेश को जानती हो ?

नहीं, उसे क्या हुआ ?

उसे मल्हार लड़की सरजा से प्यार हो गया था। अभी सरजा छह महीने की गर्भवती है, गाँव वालों को इसका पता चल गया है। गाँव के लोगों ने उन्हें रंगे हाथों पकड़ लिया और अब भीड़ उन्हें मारने की कोशिश कर रही है।

मुझे उन्हे बचाने के लिए कुछ करना चाहिए।

तुम इन सब में क्यों पड़ना चाहती हो? चुप रहो इससे हमारा कोई लेना-देना नहीं है।

समाज में हो रहे किसी भी अन्याय से मेरा लेना-देना है। इससे तुम्हारा भी लेना-देना है। यदि सभी चुप रहेंगे तो यह समाज कभी नहीं बदलेगा।
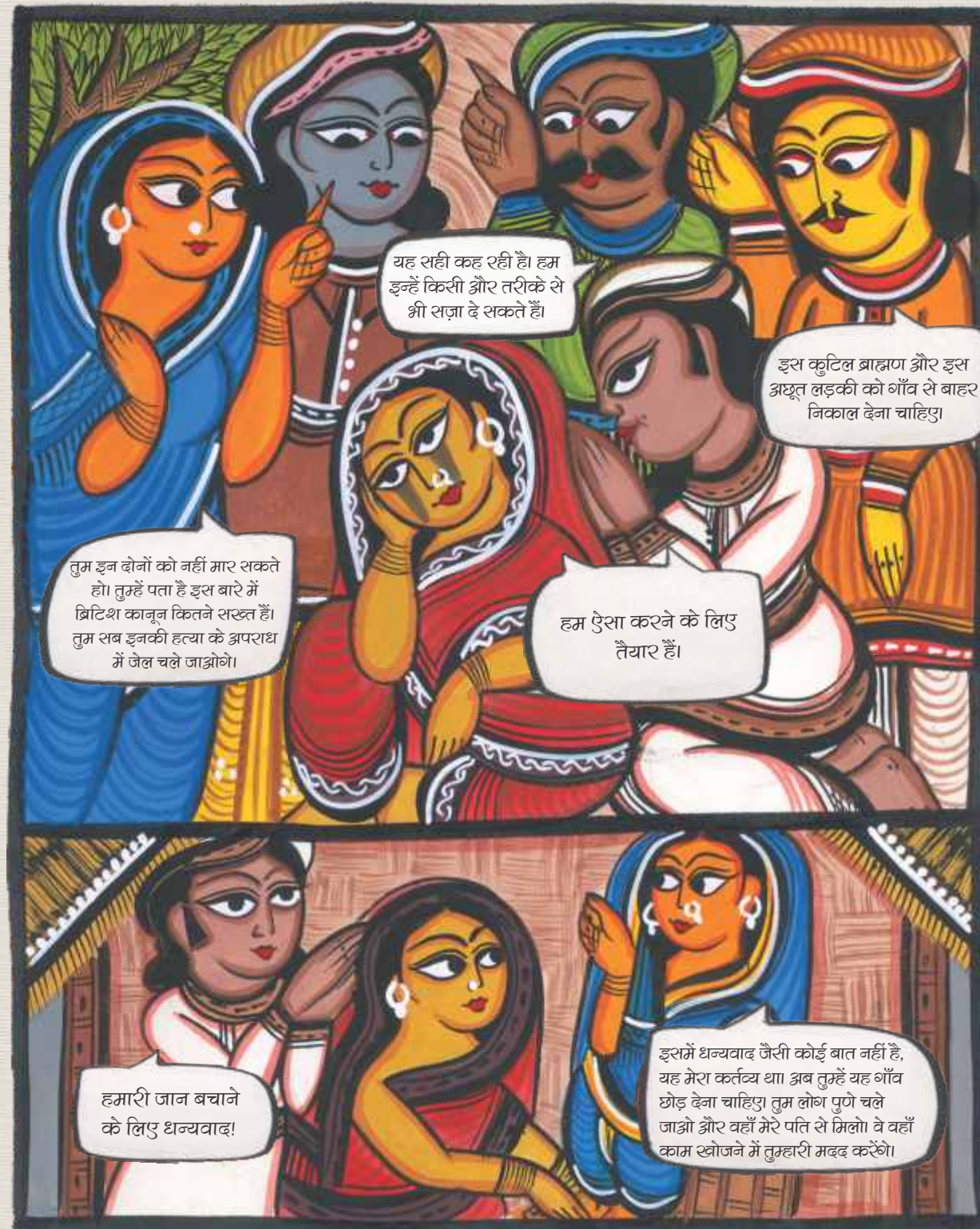
यह सही कह रही है। हम इन्हें किसी और तरीके से भी सज़ा दे सकते हैं।

इस कुटिल ब्राह्मण और इस अछूत लड़की को गाँव से बाहर निकाल देना चाहिए।

तुम इन दोनों को नहीं मार सकते हो। तुम्हें पता है इस बारे में ब्रिटिश कानून कितने सख्त हैं। तुम सब इनकी हत्या के अपराध में जेल चले जाओगे।

हम ऐसा करने के लिए तैयार हैं।

हमारी जान बचाने के लिए धन्यवाद!

इसमें धन्यवाद जैसी कोई बात नहीं है, यह मेरा कर्तव्य था। अब तुम्हें यह गाँव छोड़ देना चाहिए। तुम लोग पुणे चले जाओ और वहाँ मेरे पति से मिलो। वे वहाँ काम खोजने में तुम्हारी मदद करेंगे।

1877 में महाराष्ट्र में भयावह सूखा पड़ा। सावित्रीबाई ने इस सूखे की स्थिति के बारे में बताते हुए ज्योतिराव को एक पत्र लिखा :

20 अप्रेल 1877
ओटूर, जुन्नेर

सत्य का सारांश
परम आदरणीय ज्योतिबा
सावित्री का प्रणाम

1876 भी गुज़र गया, पर सूखा जस का तस अपने भयावह रूप में अभी भी है। पशु और मनुष्य भूमि पर तड़प-तड़प कर दम तोड़ रहे हैं। भोजन और चारे का भीषण संकट है। लोग मजबूरी में अपना गाँव छोड़ कर जा रहे हैं। कुछ लोग तो अपने बच्चे और युवा लड़कियां तक बेच कर गाँव छोड़ रहे हैं। नदियां, तालाब और सभी जल स्त्रोत सूख चुके हैं - पीने के लिए पानी नहीं है। पेड़ों पर पत्ते नहीं हैं, वह सूख चुके हैं। जमीन सूख कर चटक रही है। सूरज आग उगल रहा है। लोग भोजन और पानी के लिए रो-रो कर दम तोड़ रहे हैं। कुछ लोग जहरीले फल खा कर मर रहे हैं। लोग प्यास बुझाने के लिए अपना पेशाब पी रहे हैं।

हमारे सत्यशोधक स्वयंसेवकों ने लोगों को भोजन और अन्य जीवन रक्षक सामग्री देने के लिए एक कमेटी और राहत दल बनाया है।

भाई कोंडज और उनकी पत्नी उमाबाई मेरा ख्याल रखते हैं। ओटूर के शास्त्री, गणपती सखारान, दुम्ब्रे पाटिल और अन्य लोग आप से मिलने का कार्यक्रम बना रहे हैं। अच्छा होगा कि आप सतारा से ओटूर आ जाएँ और यहाँ से अहमदनगर चले जाएँ।

आपको आर. बी. पंत और लक्ष्मण शास्त्री याद होंगे, उन्होने मेरे साथ प्रभावित क्षेत्र का दौरा किया और प्रभावितों को कुछ आर्थिक मदद भी दी।

साहूकार इस स्थिति का फायदा उठा रहे हैं। सूखे के कारण बहुत बुरी स्थिति बन रही है। दंगे भड़क रहे हैं। यह सब सुन कर कलेक्टर स्थिति संभालने के मकसद से आया था। पचास सत्यशोधक कार्यकर्ताओं को गिरफ्तार कर लिया गया। कलेक्टर ने मुझे बातचीत के लिए बुलाया था। मैंने उससे पूछा कि बिना किसी गुनाह और प्रमाण के निर्दोष कार्यकर्ताओं को क्यों गिरफ्तार कर लिया गया। मैंने उसे, उन्हें तत्काल छोड़ने के लिए भी कहा। कलेक्टर काफी सभ्य और निष्पक्ष आदमी था। मेरी बातचीत के बाद उसे स्थिति समझ में आई और उसने गोरे सिपाहियों को डांट लगाई और पूछा, 'क्या पाटिल किसानों ने यहाँ डाका डाला है ? इन्हे छोड़ दो!' उसने लोगों की गंभीर स्थिति देखी और तुरंत ही ज्वार से भरी हुई चार बैलगाड़ीयां मदद के तौर पर भेज दीं।

आपने गरीबों के लोकहित और परोपकार का जो काम शुरू किया है, मैं उसमें अपनी भागीदारी निभाना चाहती हूँ। मैं आपको विश्वास दिलाती हूँ कि मैं आपके काम में हमेशा मददगार रहूँगी। मेरी कामना है कि ईश्वर के इस काम में बहुत से लोग आपकी मदद करें।

अब मैं यहीं समाप्त करती हूँ।

आपकी
सावित्री

फूले दंपति ने सूखा राहत के लिए धन एकत्र किया।

उन्होने दाखंवाड़ी में विक्टोरिया बाल आश्रम शुरू किया जहां लोगों के भोजन का प्रबंध था।
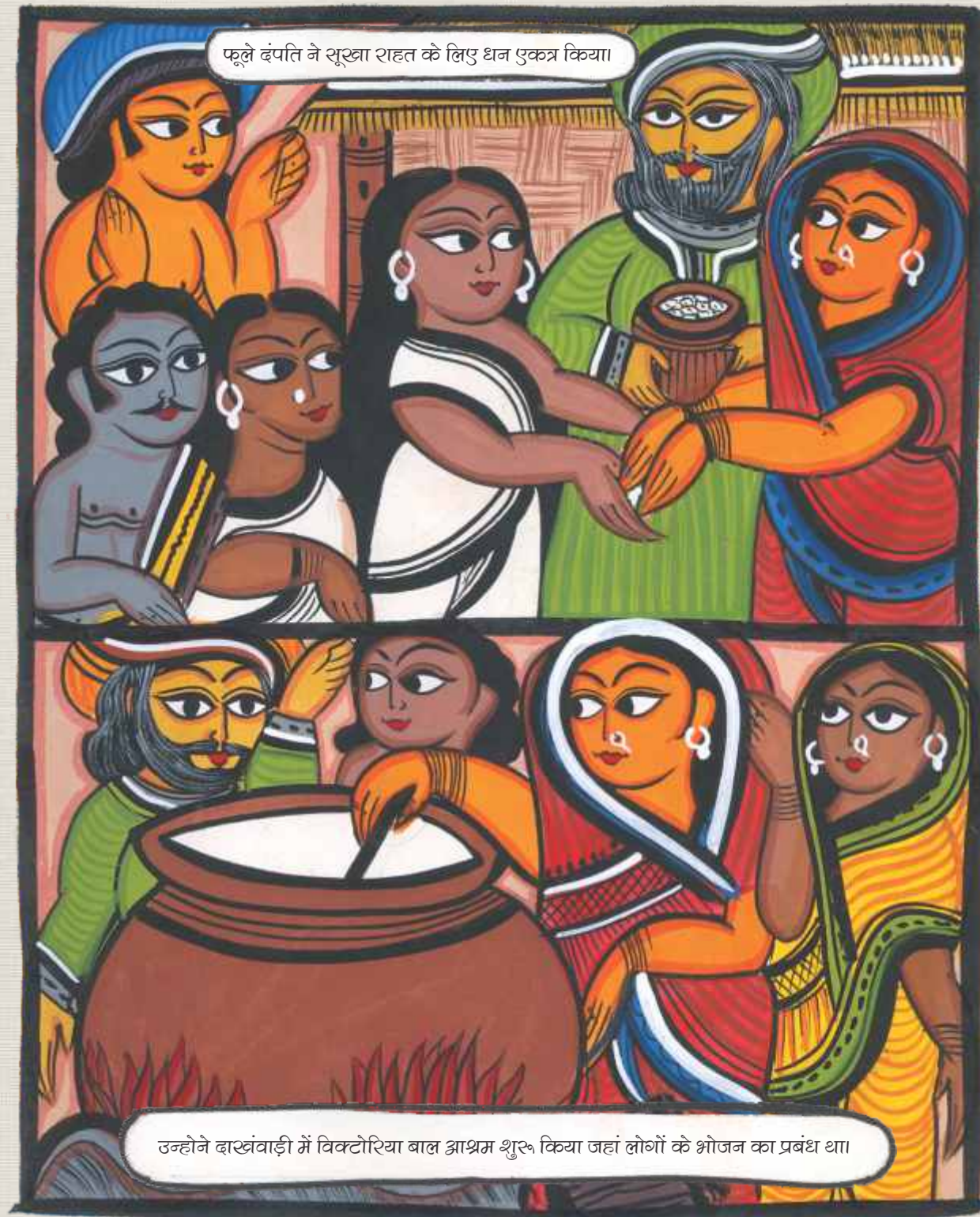
उनकी शव यात्रा के समय यशवंत को घट ले कर आगे-आगे चलना था।

तुम गोद लिए बेटे हो इसलिए तुम घट ले कर नहीं चल सकते हो इसे मैं ले कर चलूँगा। क्योकि मैं उनका रक्त संबंधी हूँ।

28 नवंबर 1890 को ज्योतिराव का देहावसान हो गया।

मैं उनकी पत्नी हूँ यह घट ले कर मैं चलूँगी।

ज्योतिराव के देहावसान के बाद सावित्रीबाई ने सत्यशोधक समाज की कमान संभाली। 1893 में ससवाद में हुए सत्यशोधक सम्मेलन की अध्यक्ष भी वह स्वयं थीं।

ज्योतिराव को मुखाग्नि भी सावित्रीबाई ने दी, जबकि परम्पराओं के अनुसार महिलाएं इस रीति में हिस्सा नहीं लेती थी। इसने सभी उपस्थितों को चकित कर दिया।
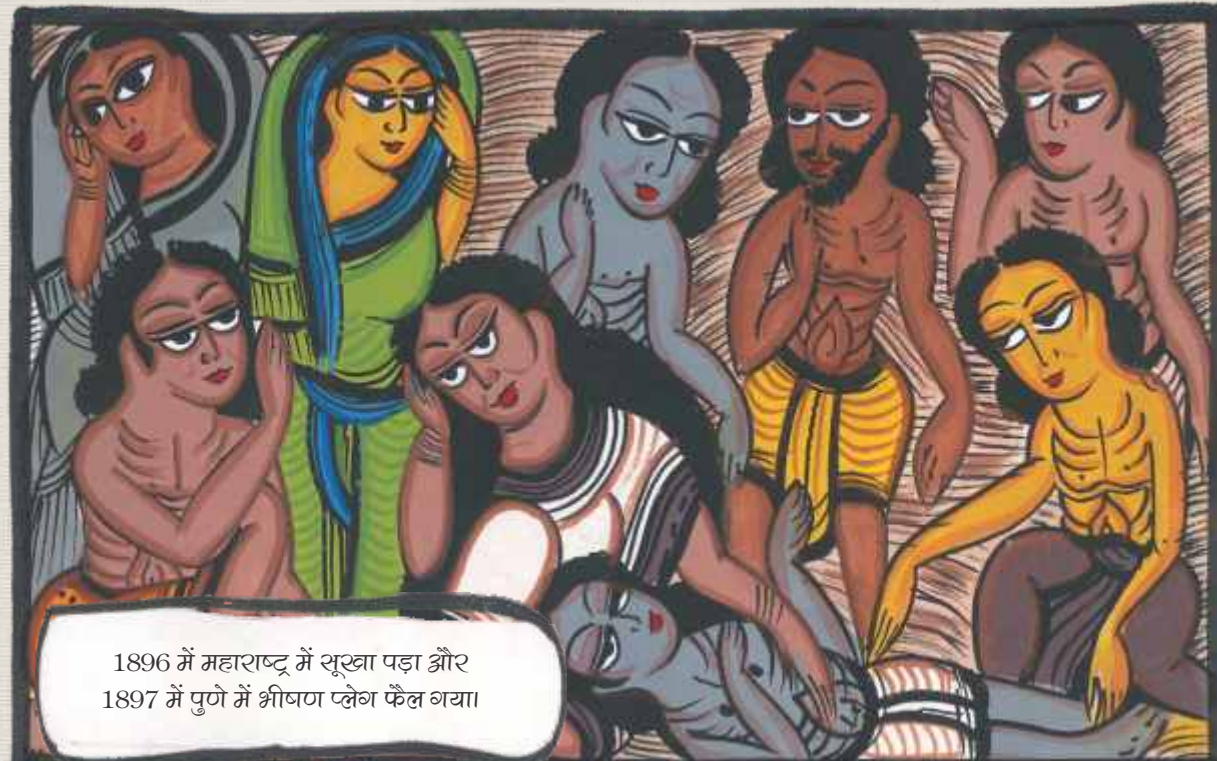
1896 में महाराष्ट्र में सूखा पड़ा और 1897 में पुणे में भीषण प्लेग फैल गया।

सावित्री इन दो सालों में पूरी तरह राहत के काम में जुटी रहीं। उन्होने यशवंत को भी सेना की नौकरी से छुट्टी ले कर पूणे वापस आने को कहा ताकि वह राहत कार्य में उनकी मदद कर सके।

यशवंत ने प्लेग प्रभावितों की चिकित्सा के लिए एक अस्पताल खोला।

पांडुरंग बाबाजी गायकवाड का बेटा, जो मुंधवा से बाहर महार बस्ती में रहता है, प्लेग की चपेट में है।

हम उसे खोज कर तुरंत अस्पताल ले कर आएंगे।
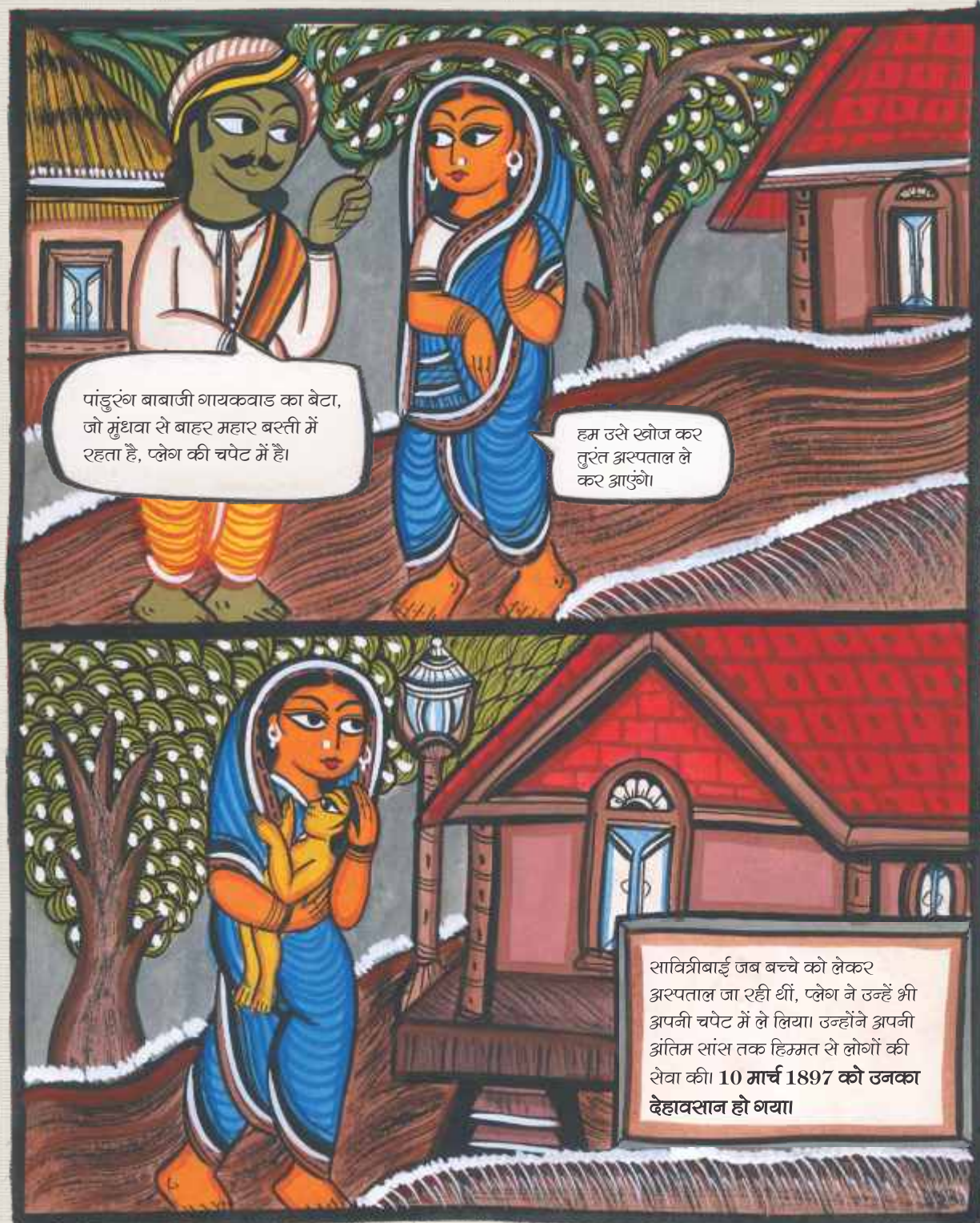
सावित्रीबाई जब बच्चे को लेकर अस्पताल जा रही थीं, प्लेग ने उन्हें भी अपनी चपेट में ले लिया। उन्होंने अपनी अंतिम सांस तक हिम्मत से लोगों की सेवा की। **10 मार्च 1897 को उनका देहावसान हो गया।**

संदर्भ

1. **B.R. Sunthankar, Maharashtra 1858-1920,** Popular Book Depot, 1993, Bombay
2. **Braj Ranjan Mani and Pamela Sardar eds.,** A Forgotten Liberator, Mountain Peak, New Delhi, 2008
3. **Dhananjay Keer,** Mahatma Jotirao Phooley, Popular Prakashan, Bombay, 1964
4. **Donald B. Rosenthal,** "Making It" in Maharashtra, The Journal of Politics, Vol. 36, No. 2 (May, 1974), 409
5. **Dr. T. Sundararaman,** Savitribai Phule First Memorial Lecture, NCERT, 2008
6. **G.Aloysius,** Nationalism Without a Nation, OUP, New Delhi, 1997
7. **G.P. Deshpande ed.,** Selected Writings of Jotirao Phule, New Delhi, Leftword, 2002
8. **Gail Omvedt,** Cultural Revolt in a Colonial Society: The Non-Brahman Movement in Western India 1873-1930, Mumbai, Scientific Socialist Education Trust, 1976
9. **J.V. Naik, Ramkrishna Gopal Bhandarkar (1837-1925)** The Man and His Mission in Studies in History of the Deccan Medieval and Modern, M.A. Nayeem et el., eds, Pragati Publications, Delhi 2002
10. **M.G.Mali ed.,** Savitribai Phule Samagra Wangmaya, Mumbai, Maharashtra Rajya Sahitya aani Sanskriti Mandal, 1998
11. **Nicholas B. Dirks,** Castes of Mind: Colonialism and the Making of Modern India
12. **Parimala V. Rao,** Educating Women And Non-Brahmins As 'Loss Of Nationality': Bal Gangadhar Tilak and the Nationalist Agenda in Maharashtra
13. **Rosalin O'Hanlon,** Caste, Conflict and Ideology: Mahatma Jotirao Phule and Low Caste Protest in Nineteenth Century Western India, Cambridge, Cambridge University Press, 1985
14. **Rosalind O'Hanlon,** Maratha History as Polemic: Low Caste Ideology and Political Debate in Late Nineteenth-Century Western India, Modern Asian Studies, Vol. 17, No. 1 (1983), 1
15. **Susie Tharu and K. Lalita Eds.** Women Writing In India: 600 B.C. to Early 20th Century. (New York: The Feminist Press, 1991)
16. **Tara Chand,** History of the Freedom Movement in India Vol II, Ministry of Information and Broadcasting, New Delhi, 1967

अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय

अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन एक अलाभकारी संस्था है जो भारत में शिक्षा की गुणवत्ता और प्रभाव के लिए बड़े पैमाने पर प्रयासरत है। हम इससे संबन्धित क्षेत्रों जैसे स्वास्थ्य,पोषण, शासन और पर्यावरण के क्षेत्र में भी काम कर रहे हैं। अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय का आधार अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन का एक दशक तक का स्कूली शिक्षा में अनुभव है।

अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय, अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन के काम का एक अभिन्न हिस्सा है, जिसका मुख्य उद्देश्य भारत में शिक्षा और उससे संबन्धित क्षेत्रों में आ रहे अवरोधों और चुनौतियों से निबटने के लिए ज्ञान का सृजन करना और प्रतिभाओं को विकसित करना है, जो इस क्षेत्र में दीर्घकालीन अभिवृद्धिकारक का काम कर सकें। विश्वविद्यालय मज़बूत सामाजिक हित के लिए प्रतिबद्ध है। यह देश के कुछ विश्वविद्यालयों में एक है जो शिक्षा और विकास के लिए समर्पित हैं और जिसकी दृष्टि न्याय-संगत समानता पर आधारित मानवीय तथा सतत् समाज की स्थापना है।

व्यक्ति एवं विचार अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय की एक पहल है, जिसके माध्यम से हम विभिन्न सामाजिक प्रवर्तकों, वैज्ञानिक, कलाकार, दर्शन-शास्त्री और शिक्षाविदों, जिन्होंने हमें गहराई तक प्रभावित किया है, के कार्य, विचार और जीवन को सभी तक पहुंचाने का प्रयास कर रहे हैं। हमारी आशा है कि इस प्रक्रिया के दौरान हम एक ऐसा प्लेटफार्म तैयार कर सकेंगे जहां इन्हें समझा जा सके, इन पर चर्चा की जा सके और इसे अपनाया जा सके।

यह ग्राफिक उपन्यास सावित्रीबाई फूले के जीवन और कार्य पर आधारित है। सावित्रीबाई ने उस समय के सामाजिक चलन के विरुद्ध संघर्ष करते हुये अतुलनीय हिम्मत और सेवा का जीवन जीया और सबके लिए शिक्षा,समानता और न्याय के लिए संघर्ष किया।

Pixel Park, B Block, PES-IT Campus
Electronics City, Hosur Road
Beside NICE Road, Bangalore 560100
http://www.azimpremjiuniversity.edu.in